पुरुष और नारी में समानता नहीं, सामंजस्य की दरकार

डॉ. पूजा गुप्ता*

भारतीय समाज में हजारों वर्षों तक स्त्रियाँ उपेक्षित रही हैं और उनका सामाजिक महत्त्व पुरुषों के मुकाबले बहुत कम रहा है। उन्हें शिक्षा के अधिकार से वंचित किया गया। वह घर की चारदीवारी में ही कैद होकर रहीं। उन्हें किसी भी कार्य-क्षेत्र में प्रवेश की अनुमति नहीं दी गई। स्त्री की पहचान केवल पुरुष की सेविका व भोग्या के रूप में ही हुआ करती थी। परन्तु आधुनिक युग में नारी ने अपनी महत्ता को पहचाना। दासता के बन्धनों को तोड़कर, उसने स्वतंत्रता की साँस ली। आज, स्त्री पुरुष के कँधे से कँधा मिलाकर चलती है। शिक्षा, राजनीति, व्यवसाय आदि विभिन्न क्षेत्रों में आधुनिक स्त्री ने अपनी प्रतिभा का सुन्दर परिचय दिया। वर्तमान समय में कोई भी कार्य-क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ स्त्रियों का प्रवेश न हुआ हो। वह पुरुषों की भाँति ही उच्च शिक्षा ग्रहण करती है और घर की सीमाओं से बाहर निकल कर स्कूल, कॉलेजों, कार्यालयों, अस्पतालों आदि में अपनी कार्यक्षमतानुसार स्थान प्राप्त करती है। इस स्वतंत्रता व स्वावलंबन से समाज के आइने में स्त्री व्यक्तित्व की छवि काफी बदल गई है। इस बदलाव का तात्पर्य समाज में उनके स्थान और दायित्व से है।

आज स्त्री और पुरुष को समान समझा जाता है। परन्तु जहाँ तक दोनों में समानता का प्रश्न है, वह स्त्री को समाज में उचित स्थान दिलाने और उन्हें शिक्षा व अन्य अधिकारों में समान स्तर दिलाने की बात है, न कि दोनों के बीच किसी भी प्रकार की प्रतिस्पर्धा की।

नारी और पुरुष के व्यक्तित्व में अन्तर होता है। इस प्राकृतिक अन्तर के कारण दोनों में 'समानता' का प्रश्न ही नहीं उठता। पुरुष स्वभावतः आक्रामक, उग्र, अपेक्षाकृत कम भावुक, ज्यादा चिन्तनशील होता है जबकि स्त्रियाँ भावुक, ममतामयी, त्यागमयी, दया-क्षमा-करुणा आदि से युक्त तथा मन से कहीं अधिक शांत होती हैं। शारीरिक कार्य-क्षमता में भी पुरुष स्त्रियों से आगे हैं। नारी देह कोमल व अपेक्षाकृत नाजुक कमजोर होती है। प्रजनन एवं संतति-पालन के प्रकृति-प्रदत्त दायित्व के कारण स्त्रियों को अधिक शारीरिक कष्ट सहना पड़ता है और इसका उनकी शारीरिक कार्य क्षमता पर प्रभाव पड़ता है। यह एक सर्वविदित तथ्य है। इस कसौटी पर दोनों में समानता लाना असम्भव है। यदि समानता की दुहाई देकर नारी अपने सामाजिक दायित्व से मुँह मोड़ ले तो ऐसी समानता का कोई लाभ नहीं।

पुरुष और नारी जीवन-रूपी गाड़ी के पहिए समान हैं। दोनों को साथ मिलकर ही इसे चलाना होगा। अपने व्यक्तित्व के अनुसार ही दोनों को अपने कर्तव्य का पालन करना होगा। गृहस्थ जीवन को चलाने के लिए दोनों में समानता की नहीं, सामंजस्य की आवश्यकता है। आपसी समझदारी से उन्हें इसे स्वीकार करना होगा कि दोनों के दायित्व अलग-अलग हैं। अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करके उन्हें अपने लक्ष्य तक पहुँचना है जो दोनों के लिए समान है।

पुरुष और नारी के सह-अस्तित्व से ही जीवन में समरसता आएगी। नारी को स्वयं को पुरुष समान बनाने के क्रम में अपने नारीत्व को नहीं खोना चाहिए। अपने प्रकृति-प्रदत्त गुणों को विकसित करने के बदले, वे पुरुषों के गुण न ओढ़ ले। समानता के नाम पर नारी की हर क्षेत्र में पुरुष से होड़ ठीक नहीं है। नारी का गौरव इसी बात में है कि वह स्त्रियोचित गुणों से युक्त रहे। ममता, मातृत्व, कोमलता, सुन्दरता, सहजता आदि से युक्त रहकर भी नारी अपने व्यक्तित्व को आसानी से विकसित कर सकती है। पुरुष की भावनाओं को समझकर व आपसी सहयोग से जीवन चक्र चला सकती है। पुरुषों के समान कार्य करने व उनकी नकल करने से नारी का सम्मान नहीं बढ़ जाता। नौकरियों के चुनाव में भी उन्हें अंधाधुंध नकल पर नहीं उतर आना चाहिए। उन्हें नारीत्व से युक्त रहकर ही समाज में सम्मान मिल सकता है और वे अपने दायित्व का निर्वाह भी कर सकती हैं। पुरुष और नारी में समानता का वास्तविक मानदंड तो नई चेतना, आत्मनिर्भरता, नए विचार व आधुनिक दृष्टिकोण हैं। दोनों में समानता लाने के बजाय आपसी समझ व सहयोग लाने की आवश्यकता है।

□□□□

* सहायक प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।